रात्रि क्लास ओमशांति 28/1/67

"इस रात्रि क्लास में दो वर्ष पहले ही ड्रामा प्लैन अनुसार हम बच्चों प्रति बापदादा ने डायरैक्शन और इशारे दिए हैं, जो हम सभी के ध्यान पर ड्रामा अनुसार ही न रहा है।"

ऐसे भी बहुत पूछते हैं सभी से ऊँच ते ऊँच कौन है? तो भी कहते हैं ऊँच ते ऊँच भगवान है। प्रिय ते प्रिय कौन है? तो भी कहेंगे, भगवान। पतित–पावन कौन है? कहेंगे, भगवान है। बाप बच्चों को ज़रूर वर्सा ही देंगे। यह है सभी कॉमन बातें। बाप ज़रूर सभी को साथ ले जावेंगे। आत्माएँ सभी मुक्तिधाम में रहने वाली हैं। चाहते हैं भगवान आए। ज़रूर दुःखी हैं। बाप आते हैं सभी को सुख–शांति देने। शांति तो सभी चाहते हैं। कोई–2 मनुष्य थोड़े भी समझ जाते हैं। कोई से तो कितना भी माथा मारो तो भी समझते नहीं। ड्रामा प्लैन अनुसार गीता के भगवान ने गाली तो खाई है ना। तुम सिद्ध कर सकते हो, कृष्ण नहीं, शिव है; परन्तु शिव को ऐसी गाली नहीं देंगे। गाली फिर ब्रह्मा को देते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। यह समझते नहीं कि गाली देते हैं। यह है भक्तिमार्ग का उल्टा ज्ञान। बाप आकर मुक्तिधाम तो ले जावेंगे ना और फिर राजयोग भी सिखलाते हैं। तुम जीवनमुक्ति में जाते हो। बाकी मुक्ति में जाते हैं। मुक्ति ही तो मांगते हैं ना। पापों का हिसाब–किताब सिर पर है वह हिसाब–किताब चुक्तू कर सभी चले जावेंगे। समझाया जाता है नॉलेज को धारण कर ऊँच ते ऊँच पद पा लेवे। आगे चलकर बच्चों को देखना है। अभी तो टाइम पड़ा है। नॉलेज तो सभी को मिलनी चाहिए ना। सभी को मालूम पड़ेगा; परन्तु टाइम नहीं रहता है पुरुषार्थ करने का। समझेंगे भी, फिर भी इतना दूर–2 से आए थोड़े ही सकेंगे। करके अल्ला को याद करेंगे सो तो ऐसे भी याद करते रहते हैं। मज़ा तो तुम बच्चों को है। तुम कहते हो भगवानुवाच राजयोग सिखलाकर राज प्राप्त कराते हैं। तुम बच्चे रिज़ल्ट को देखते हो। एम–ऑब्जेक्ट सामने हैं। बाकी मत–मतांतर तो बहुत हैं। उन्हों का भी कोई दोष नहीं। यह बना–बनाया नाटक है। हम समझते हैं यह सभी एक्टर्स हैं। निंदा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो ज़रूर महिमा करनी पड़े। अपना ही नाटक है। हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़े ही मानेंगे। इनको देखकर तुम खुश होते हो। निंदा नहीं कर सकते हो। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने लिए समझाते हैं। बाप बिगर तो कोई छूड़ा नहीं सकते। रावण राज्य से बाप ही छुड़ावेंगे। भागीरथ नाम भी है ना। कहते हैं भागीरथ ने गंगा लाई। वह कैसे लाई? तुम तो ज्ञान हो ज्ञान गंगाएँ। पतित–पावनी भी तुम हो ना। तुम पतितों को पावन बनाते हो। तुम गंगाएँ सागर से निकली हो। सबके साथ सागर तो बात नहीं करते। सागर से ही ज्ञान गंगाओं का निकलना कैसे होता है यह भी जब कोई समझो। फिर भी मेहनत करना है। देह अभिमान टूटता ही नहीं। टाइम लेता है। तुम बच्चे खुद भी जानते हो कर्मातीत अवस्था को पाना मेहनत है। कर्मातीत हो जावेगी फिर रह न सकेंगे। कुछ भी हो, कोई भी मरे, शिवबाबा तो जीता है ना। उनके तो डायरैक्शन्स बुद्धि में हैं ना। शिवबाबा को ही याद करना है। बाप हो, न हो। बाप के लिए भी कुछ कह नहीं सकते। पावन तो तुम ज्ञान गंगाओं को बनाना है। कुछ भी हो जाए तुम्हारा धंधा तो चलता रहेगा। तुम सेन्टर्स बंद नहीं कर सकते हो। कुछ भी हो जाए। तुम बच्चों का काम है यह धंधा करना और याद की यात्रा में रहना। बाकी शिवबाबा का रथ एक ही मुकर्रर ब्रह्मा है। तुम ब्राह्मण हो। तुम कह सकते हो बाप बच्चों द्वारा करा रहे हैं। बाप कोई में भी प्रवेश कर पढ़ा सकते हैं। शिवबाबा ने किसमें प्रवेश किया है? शूद्र में कि ब्राह्मण में? शूद्र में प्रवेश करना पड़े ना। इस समय तो शूद्र वर्ण है ना। प्रवेश कर फिर नाम बदला है। एडॉप्ट किया है। तो यह बातें शास्त्रों में न होने कारण मूँझते हैं। ब्रह्मा माना ही ब्राह्मण। ब्राह्मण फिर बनते हैं फरिश्ता। फिर बनते हैं देवता। तुम सब फरिश्ते बनते हो, फिर देवता बनते हो। फरिश्ता नाम भी है ना। सूक्ष्मवतनवासी फरिश्ते हैं। जगदम्बा ब्राह्मण है फिर फरिश्ता बन पीछे देवता बनती है। ओम।